वार्तालाप–548, डेन्टल (हरियाना), तारिख–6.4.08
Disc.CD No. 548, dated 28.02.08 at Dental (Hariyana)

समय–4.05–7.20
जिज्ञासु– बाबा, माँगने से मरना भला।
बाबा– ठिक बात तो है। मर जाओ लेकिन माँगो मत।
जिज्ञासु– नहीं बाबा। कोई जिंदा रहना चाहे तो?
बाबा– जिंदा रहना चाहे तो, तो खराब बात है। ये तो बुरी बात है कि तुम माँगते हो। अरे, ऊपरवाले ने हाथ–पाँव दिये है।
जिज्ञासु– मातायें तो माँगती है ना?
बाबा– मातायें माँगती है? क्या, बाबा ने मुरली में बोला है कि मातायें माँगे?
जिज्ञासु– नहीं, माँगे नहीं तो घर तो तभी चलेगा.....
बाबा– माने आपने अपने को दास–दासी समझ लिया है। जैसे दासों को बेचा जाता था। मातायें अपने को वस्तु समझे या अर्ध्दांगिनी समझे? क्या है?
जिज्ञासु– अर्ध्दांगिनी।
Time: 04.05-07.20
Student: Baba [it is said], it is better to die than to ask for something.
Baba: It is indeed correct. Die, but don't ask for something.
Student: No, Baba. What if someone wishes to live?
Baba: If he wishes to live it is wrong. It is wrong that you ask for something. Arey, the One above (God) has given you hands and legs.
Student: The mothers do ask, don't they?
Baba: The mothers ask? Has Baba said in the murli that the mothers should ask?
Student: No, we will be able to manage the house only when we ask…
Baba: It means that you have considered yourself to be maids and servants. Just like slaves used to be sold. Should the mothers consider themselves to be a thing or should they consider themselves as *ardhangini*[1]? What are they?
Student: *Ardhangini*.

बाबा– अर्ध्दांगिनी है। पति की जो भी कमाई है उसमें आधा हिस्सा उनका है। तो जिसका आधा हिस्सा है उसको माँगने की दरकार है?
किसीने कहा– नहीं।
दूसरा जिज्ञासू– चुपके से उठा लो।
जिज्ञासु–....बाबा वो अगर नहीं देंगे तब फिर.....?
बाबा– 24 घंटे कंधे पर चढ़े बैठे रहेंगे क्या? 24 घंटे घर में ही बैठे रहेंगे क्या?
जिज्ञासु– नहीं,..... पर पैसे देते वक्त तो मुट्ठी को बंद रखते है ।
बाबा– कितनी देर रखेंगे? मुट्ठी बंद किये क्या थक नहीं जायेंगे? ये कहो माताओं ने दासत्व स्वीकार कर लिया हैं। द्रौपदी ने स्वीकार नहीं किया था।
जिज्ञासु– स्वीकार तो नहीं किया; लेकिन.....
बाबा– किन....
जिज्ञासु– माँगना तो पड़ता ही हैं।
Baba: They are *ardhangini*. Half the share of the husband's earnings belongs to them. So is there any need for the one who has half of the share to ask?
Someone said: No.
Another Student: Take it away quietly.
Student: .... Baba, what if they don't give?

[1] half partners in life.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: Will he be sitting on your shoulder for 24 hours? Will they be sitting at home for 24 hours?
Student: No…. But when it comes to giving money, they keep their fist closed.
Baba: For how long will they keep [their fist closed]? Will they not be tired of closing their fist? Say this 'the mothers have accepted slavery'. Didn't Draupadi accept it?
Student: We haven't accepted it; but…
Baba: But….
Student: We do have to ask.

बाबा– क्यों पड़ता हैं? ऐसी भी मातायें है जो माँगती नहीं है। चक्की चलाय के अपना कमाय लेती है घर मे बैठे–2। वेफर्स बनाती हैं। अपने खर्चे का खर्चा निकाल लेती हैं। क्यों हम दास–दासी बन जायें? अरे, जिसकी बुद्धि में इतनी बात नहीं बैठती हैं कि स्त्री अर्ध्दांगिनी हैं तो उसका आधा दे देना चाहिए खर्चे के लिए...।
जिज्ञासु– उनको बिना कहे देना चाहिए।
बाबा– बिना कहे देना चाहिए।
जिज्ञासु– पिटेंगे तो?
बाबा– धृतराष्ट्र हैं या दुर्योधन हैं या दुशासन हैं? क्या कहा जाये उनको? बहुत से भाईयों को नाक पर गुस्सा आ रहा होगा। धृतराष्ट्र ने क्या किया? सोच–समझ के अपने आप देना चाहिए या माँगने से देना चाहिए?
जिज्ञासु– अपने आप देना चाहिए।
बाबा– और दुर्योधन (ने) तो माँगने से भी नहीं दिया। सुई की नोक के बराबर भी नहीं देंगे। ऐसे भी पुरूष हैं। एक पैसा भी पत्नी के हाथ में नहीं रहने देते। बाबा फिर आयें हैं माताओं के नाम बैंक बैलेंस बना रहे हैं।
Baba: Why do you have to ask? There are such mothers too who don't ask [for anything]. They grind on a millstone and earn their living sitting at home. They prepare wafers. They earn their living. Why should we become maids and servants? Arey, the one in whose intellect such a small thing doesn't sit that a wife is *ardhangini*, so we should give her half the share [of our earning] for her expenses…
Student: They should give it without being told.
Baba: They should give it without being told.
Student: What if they beat?
Baba: Are they Dhritrashtra, Duryodhan or Dushasan[2]? What should they be called? Many brothers must be angry. What did Dhritrashtra do? Should they think with due care and give it on their own or should they give after being asked?
Student: They should give it on their own.
Baba: And Duryodhan didn't give even on being asked. They won't give anything equal to even the tip of a needle. There are such men too. They don't let even a penny stay in their wife's hand. Baba has come [and] is making a bank balance on the name of the mothers.

समय–15.50–17.40
जिज्ञासु– बाबा, शिवबाबा तो है ही अभोक्ता। आगे एक बच्ची के तन में आता था। कुछ खिलाते तो झट भाग जाता । गुलाब जल छिडका और झट भागा।
बाबा– तो? अरे, क्या अंदर बात प्रश्न क्या रखा अंदर वो तो बाहर निकालो।
जिज्ञासु– एक बच्ची के तन में आता था....
बाबा– हाँ, यज्ञ की आदि की हिस्ट्री बताई। कोई की बच्ची के अंदर आता था शिवबाबा उसके ऊपर गुलाबजल झाडा तो गुलाबजल की खुशबू उसे जरूरत नहीं। न वो खुशबू लेता ना वो उसको बदबू का असर होता। क्या? जब खुशबू ड़ाला तो भागा।

[2] Villainous characters in the epic Mahabharata.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 15.50-17.40
Student: Baba, Shivbaba is indeed *abhogta*[3]. Earlier He used to come in the body of a daughter. He used to run away when something was fed. As soon as rose water was sprinkled he ran away.
Baba: So? Arey, what question do you have inside, bring it out.
Student: He used to come in the body of a daughter…
Baba: Yes, it was said about the history of the beginning of the yagya. Shivbaba used to come in in someone's daughter. So, when rose water was sprinkled; He doesn't require the fragrance of rose water. Neither does he smell fragrance nor does odor affect Him. What? He ran away as soon as fragrance was sprinkled.

जिज्ञासु– कुछ खिलाते थे तो झट भागा ?
बाबा– हाँ, कुछ खिलाते–पिलाते थे तो झट भाग जाता था माने अभोक्ता था। अभोक्ता का पार्ट बजाके दिखाया उस समय। वो तो शुरूआत थी ना। शिवबाबा ने जो शुरूआत में पार्ट बजाया बच्ची के द्वारा वो शुरूआत हैं या मध्य हैं या अंत हैं? वो शुरूआत का पार्ट हैं। अंत का पार्ट क्या होगा, मध्य का पार्ट क्या होगा? उससे ऊँची स्टेजवाला पार्ट होगा या नीची स्टेज का पार्ट होगा? ऊँची स्टेज का पार्ट होगा। ऊँची स्टेज का मतलब हैं शरीर मे रहते हुए, संग के रंग मे आते हुए भी और संग का रंग ना लगे। भागने की दरकार ही न पड़े।
Student: He used to run away when fed something.
Baba: Yes, He used to run away as soon as he was fed or made to drink something, meaning He was *abhogta*. He played a part of *abhogta* at that time. That was just the beginning, wasn't it? The part that Shivbaba played through the daughter in the beginning; is it the beginning, the middle or the end? That is the part of the beginning. What will be the part in the end? What will be the part in the middle? Will it be a part of a higher stage or a lower stage? It will be a part of a higher stage. A higher stage means, He should not be colored by the company despite being in a body, despite coming in the color of the company. There shouldn't be the need to run away at all.

समय–18.18–22.18
जिज्ञासु– बाबा, जो अभी नवरात्रे शुरू हो रहे हैं। नवरात्रियों में जैसे देवी की बहुत पूजा करते हैं। पूजा करते हैं तो वो देवशक्ति जो किसी पर आती हैं मतलब की कईयों का कल्याण भी करती हैं। तो वो आत्मा में कितना पावर होती है?
बाबा– भूतप्रेतों का सूक्ष्मशरीर होता हैं या स्थूल शरीर होता हैं?
सभी– सूक्ष्म शरीर।
बाबा– सूक्ष्म में ज्यादा ताकत होती हैं या स्थूल में ज्यादा ताकत होती हैं? सूक्ष्म में ज्यादा ताकत होती हैं। तो सूक्ष्म में ज्यादा ताकत होने की वजह से वो कुछ करिश्मा करके दिखा सकती हैं क्योंकि आगे–पीछे की बातों का उनको जल्दी ज्ञान हो जाता हैं। कुछ जन्म आगे, कुछ जन्म पीछे; लेकिन हम स्थूल चोले मे बंधे हुए हैं हमको कुछ भी पता नहीं लगता। तो वो आत्मायें कुछ ना कुछ थोड़ा बहुत चमत्कार दिखाती हैं। उसको कहते हैं भूतप्रेत विद्या, तांत्रिक विद्या, मैली विद्या।
Time: 18.18-22.18
Student: Baba, the (festival of) *Navratri*[4] is beginning now. The *devi* (female deities) are worshipped a lot at *Navratri*. When they are worshipped; the *devshakti* (the divine power) that enters someone, it brings benefit to many. So, how much power does that soul have?
Baba: Do ghosts and spirits have a subtle body or a physical body?
Everyone: A subtle body.

[3] the one who doesn't seek pleasures of the body.
[4] A nine day festival during which the goddess Durga is worshipped

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: Does a subtle [body] have more power or does a physical [body] have more power? A subtle [body] has more power. So as there is more power in a subtle [body], it can do miracles and show because they come to know about the topics of the future and the past soon. Some births ahead and some births behind; but we are bound in a physical body; we don't come to know anything. So, those souls show some or the other miracle. That is called the study of ghost and spirits (*bhoot prêt vidya*), *tantric vidya*, black magic.

जिज्ञासू– और ज्यादा लेडिज में ही क्यों आती हैं? फिर ये, ये जो देवशक्तियाँ हैं ये ज्यादा लेडिज....
बाबा– देव शक्तियाँ मत कहो उनको भूतप्रेत कहो। वो अपने को देवी–देवता बोलकर के बताते हैं। बोलकर के बताते हैं तो हम उन्हे देव–देवियाँ मान ले?
जिज्ञासू– माना ज्यादा लेडिज में ही आती हैं जेन्टस मे कम आती हैं।
बाबा– उनको श्रद्धा–विश्वास जल्दी बैठ जाता हैं, कन्या–माताओं को। भाईयों को इन बातों पर विश्वास जल्दी नहीं बैठता। तो जिसको जल्दी पकड़ मे आ जायें उसी को पकड़ो। वैसे भी भय का भूत कहा जाता हैं। कमजोर आत्माओं को पकड़ता हैं।
जिज्ञासू– बाबा वैसे होते हैं ये भूतप्रेत....?
बाबा– भूतप्रेतों की ही बात करनी हैं? हाँ, क्या हैं?
जिज्ञासू– भय का भूत ही होता हैं वो होते है रियल में?
Student: And why do they enter females mostly? Why do these *devshakti* enter mostly in the females…?
Baba: Don't call them *devshakti,* call them the power of the ghost and spirits. They call themselves *devi* (female deity) or *devta* (male deity). Should we accept them to be *devi-devta* if they call themselves this?
Student: I mean, they come mostly in the females, they rarely come in males.
Baba: The virgins and mothers develop belief and faith quickly. The males don't believe such things quickly. So, the one who can be caught quickly, catch him. Nevertheless, it is said that there is a ghost of fear (*bhay ka bhoot*). It catches the weak souls.
Student: Baba, do these ghosts and spirits exist…., don't they?
Baba: Do we have to talk only about the ghost and spirits? Yes, what is it?
Student: Is it only a ghost of fear or are there ghosts in reality?

बाबा– भूत ही तो होते हैं जो आत्मायें शरीर छोड़ देती हैं। चाहे आत्महत्या कर के चाहे दूसरों की हत्या कर के जिनकी अकालेमौत होती हैं वो भूतप्रेत बन जाते हैं।
जिज्ञासू– बाबा वो फिर दिखते तो बिल्कुल ऐसे जैसे रियल में .....
बाबा– सबको दिखते हैं क्या?
जिज्ञासू– नहीं।
बाबा– वही जिनको भय बैठ गया अंदर से उनको दिखते हैं। जो कमजोर आत्मायें है उनको ही दिखते हैं। सबको थोड़े ही दिखते हैं।
जिज्ञासू– बाबा फिर वे तो बोलने लगते हैं मेरे अंदर देवी आयी थी और ढेर सारे उनके सामने बैठ जाते हैं पुजारी उनके.....
बाबा– हाँ, तो कोई सच्चा बोलते हैं क्या?
जिज्ञासू– वो तो हाथ जोड़ने लगते हैं उनके।
Baba: They are certainly ghosts. The souls who leave the body; whether it is by committing suicide or by murdering others, those who suffer an untimely death become ghosts and spirits.
Student: Baba, but they look as if they are real…
Baba: Are they visible to everyone?
Student: No.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: They are visible to only those who have fear inside them. They are visible only to the weak souls. They are not visible to everyone.
Student: Baba, then they start saying, "a *devi* had entered me" and lots of their worshippers sit in front of them…
Baba: Yes, do they speak the truth?
Student: They start joining hands in front of them.

बाबा– तुमने अभी तक ज्ञान लिया सो तुमने क्या सुना कि देवी–देवतायें सतयुग–त्रेता में होते हैं या द्वापर–कलियुग में भी होते हैं?
जिज्ञासू–.....
बाबा– तो काहे के लिए पुछती हो?
जिज्ञासू– नहीं, वो फिर.....
बाबा– वो कहते हैं, अगर सुनी–सुनाई बात सुनने से, कोई झूठ बोले तो हम मान ले?
जिज्ञासू– दुनियावाले हम से ही कहते हैं कि तुम भक्ति नहीं करते हो इसलिए तुम्हारे घर मे ये हो जाता हैं वो हो जाता हैं।
बाबा– तो उनके घर मे नहीं हो जाता हैं? वो भक्ति करते हैं उनके घर, जो भक्त बड़े–2 भक्त हैं उनके घर मे कुछ भी नहीं होता?
जिज्ञासू– वो तो कह देते हैं ना जब छोड़ देते है तो कह देते हैं।
दूसरा जिज्ञासु– शरीर छोड दिया.....
जिज्ञासु– तुम्हारे घर में इसलिए झगड़ा होता है ये होता हैं.....
Baba: What did you listen in the knowledge that you have taken till now? Do the deities exist in the Golden and the Silver Ages or do they exist in the Copper and Iron Ages?
Student: ….
Baba: Then why do you ask?
Student: No, then….
Baba: They say so; should we believe them if they narrate what they have heard, if they speak lies?
Student: The worldly people say, this and that happens in your house because you don't perform *bhakti.*
Baba: So, doesn't it happen [like that] in their house? In the house of those who perform *bhakti*…. doesn't anything happen in the house of the big devotees?
Student: They say so, don't they? The say so when we leave [the path of *bhakti*].
Another student: They left the body…
Student: This is why there are quarrels in your house, this happens….

बाबा– तो उनके कहने से हम क्यों मान लेते हैं? तो हम उनको टका सा जवाब दे कि क्या तुम्हारे घर में ये नहीं होता है सब कुछ? या जो भक्ति कर रहे हैं उनके घर में ऐसा कुछ नहीं होता? होता हैं। फालतू की बाते करने से क्या फायदा? फौरन काट कर देना चाहिए। होता क्या है हम, हम दूसरों की बाते सहज मान लेते हैं।
जिज्ञासू– नहीं, वो घर में जो और होते है ना लोग वो बोलते हैं कि तुम बाबा के ज्ञान में चल पड़ी हो भक्ति में कुछ करती नहीं हो तुम इसलिए घर में ये हो रहा हैं।
बाबा– तो उनसे कहों कि जो भक्ति कर रहें है उनके घर में कुछ नहीं होता? उनके घर में ये होता हैं कि नहीं होता हैं? कोई मरता बिल्लाता है कि नहीं?
(किसीने कुछ कहा।) बाबा– हाँ, देखो।
Baba: So, why do we accept when they say? We should give them a short answer: doesn't all this happen in your house? Or doesn't anything like this happen in the house of those who perform *bhakti*? It does. What is the use of wasteful talks? You should cut [what they say] immediately. What happens is, we accept what others say easily.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: No, the people at home say, you have started following Baba's knowledge; you don't do any *bhakti*; that is why all this is happening in the house.
Baba: So, tell them, doesn't anything happen in the house of those who do *bhakti?* Does this happen in their house (too) or not? Does anyone die, suffer or not? (Someone said something.) Yes, look.

समय–25.16–26.20
जिज्ञासु– बाबा मातायें क्या पुरूषार्थ करे जो बहुत तेज दौड़ी लगाये?
बाबा– सबसे पहला पुरूषार्थ मातायें ये करे बोलना बंद कर दे। वाचा चलाने की बहुत बड़ी मुसीबत आ जाती है।
जिज्ञासू– भाई नहीं बोलते हैं बाबा?
बाबा– बोलने दो उन्हे। उन्हे बोलने दो, लेकिन भाई लोग महाकाली बनते हैं क्या?
जिज्ञासू– दुर्योधन–दुशासन तो बनते हैं।
बाबा– वो तो बनते हैं नहीं। बने बनाये हैं। वो छोड़ देओ।
जिज्ञासू– भाई लोग बाबा अंधश्रद्धा में कम जाते हैं और मातायें अंधश्रद्धा में ज्यादा जाती हैं। भक्ति में.....
बाबा– भाई लोग गणेश हैं ना? गणेश का तो माथा चौड़ा होता है।
दूसरा जिज्ञासु– बाबा, महाकाली तो नहीं बनते है.... भैरव, उनको भी देवता कहा जाता है।
बाबा– तो महाकाली के भगत हो गये ना? वो तो और नीचे हो गये।
Time: 25.16-26.20
Student: Baba, what *purusharth* should the mothers make so that they go ahead quickly?
Baba: The first *purusharth* that the mothers should make is, stop talking. A great problem of talking arises.
Student: Baba, don't the brothers speak?
Baba: Let them speak. Let them speak, but do the brothers become *Mahakali*?
Student: They do become Duryodhan and Dushashan.
Baba: They don't become this, they are already Duryodhan and Dushashan. Leave that topic.
Student: Baba, the brothers don't believe much in superstitions and the mothers believe in superstitions more. In bhakti…
Baba: The brothers are Ganesh, aren't they? The forehead of Ganesh is broad.
Another Student: Baba, they don't become *Mahakali…* Bhaiarav, he is also called a deity.
Baba: So, they became the devotees of *Mahakali,* didn't they*?*

समय–31.30–32.30
जिज्ञासु– बाबा, एक संकल्प एक, दो, तीन, चार बारी आ रहा है फिर उसको क्या करना चाहिए? कैसे उसको कम?
बाबा– अगर दो चार बार आये तो कोई खास बात नहीं हैं। 100 बार आये तो भी गंदे संकल्प को भगाना चाहिए। श्रीमत के बरखिलाफ कोई संकल्प आता हैं तो 100 बार भी आये तो भी क्या करना हैं? तो भी भगाना हैं।
जिज्ञासू– भागता ही नहीं हैं।
Time: 31.30-32.30
Student: Baba, if a thought emerges once, twice, thrice or four times, what should we do to it? How should we make them less?
Baba: It is not something special if it (the thought) emerges twice or four times. You should chase away a dirty thought even if it comes a 100 times. If a thought emerges against shrimat, even if it comes 100 times, what should you do to it? Even then you should chase it away.
Student: It doesn't go at all.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा– नहीं भागता हैं, तब तक भगाते रहो। 63 जन्मों में वही काम जास्ती किया होगा तो वही उसी संकल्प के रूप में बार–2 आता हैं। तो बार–2 भगाना चाहिए कि नहीं भगाना चाहिए? काट दो।
जिज्ञासू– नहीं तो बाबा सेवा के लिए भी तो संकल्प आता हैं। उसको कैसे.... उसको भी भगाना है?
बाबा– वो अच्छा संकल्प हैं। सेवा के लिए जो संकल्प आता हैं वो अच्छा हुआ या बुरा हुआ? अच्छा संकल्प हुआ। उसको भगाने की क्या बात है?
Baba: If it doesn't go away, chase it away until it goes. You must have done that very work the most in the 63 births, so it comes in the form of that very thought. So, should you chase it away again and again or should you not? Cut it.
Student: Baba, thoughts of service also emerge. How should we…. should we chase that away too?
Baba: That is a good thought. If a thought of service emerges; is it a good thought or a bad one? That is a good thought. Why should you chase it away?

समय–34.55–36.11
जिज्ञासु– बाबा सिक्ख धर्म की स्थापना गुरू गोविंद सिंह ने की।
बाबा– सिक्ख धर्म की स्थापना गुरू गोविंद सिंह ने नहीं की। सिक्ख धर्म, सिक्ख धर्म की जो भी वाक्य हैं उनका मुख से निसर्न तो गुरूनानक के द्वारा हुआ हैं। उसको प्रैक्टिकल में लाने का काम सबसे जास्ती गुरू गोविंद सिंह ने किया हैं।
जिज्ञासू– गुरू नानक ने स्थापना कि गुरू गोविंद सिंह के द्वारा...
बाबा– गुरू गोविंद सिंह के द्वारा उसका विस्तार हुआ। पवित्रता की जो स्थापना हैं जो विशेष पवित्र आत्मायें जो निकली हैं पवित्रता के लिए जीवन अर्पण करनेवाले वो खालसा निकले गुरू गोविंद सिंह के द्वारा।
जिज्ञासू– गुरू गोविन्द सिंह के बाद कोई गुरू नहीं हुआ उन्होने ग्रंथ को हीकह दिया कि गुरू माने ग्रंथ।
बाबा– जो हिंदू धर्म में जैसे दस चले है–दशावतार। जैसे झाड़ के चित्र में दस बैठे हुए हैं, ऐसे ही उनके भी दस गुरू है।
Time: 34.55-36.11
Student: Baba, Guru Govind Singh established the Sikh religion.
Baba: Guru Govind Singh did not establish the Sikh religion. Guru Nanak narrated all the sentences of the Sikh religion through his mouth. The work of bringing it in practical was done by Guru Govind Singh the most.
Student: Guru Nanak established [the Sikh religion] and Guru Govind Singh…
Baba: Guru Govind Singh spread it. The establishment of purity; the special pure souls who emerged, who surrendered their life for purity; that *Khalsa* was formed through Guru Govind Singh.
Student: There was no guru after Guru Govind Singh. He said, guru means *Granth*[5].
Baba: Just like there are the ten incarnations in the Hindu religion, just like ten [religions] are shown sitting in the picture of the Kalpa tree, similarly they too have ten gurus.

समय–36.12–37.35
जिज्ञासु– बाबा मैंने सुना है कि ब्रह्मा बाबा जब साकार में थे तो बच्चे उनकी गोदी में जाते थे।
बाबा– तो?
जिज्ञासु– तो प्रजापिता ब्रह्मा की गोदी में नहीं जा सकते?

[5] The religious book of the Sikhs.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा– ये कोई नई बात हो गई क्या? जब ब्रहमा की गोद में जा सकते है बच्चे, ब्रहमा जो हैं उसकी गोद में जाने से तो खुली बात हैं, अम्मा की गोद में कोई भी कोई भी देहाभिमान नहीं आयेगा लेकिन बाप की गोद में तो... बाप तो बाप हैं भारतवर्ष में अभी भी कन्या जब जवान हो जाती है तो मातायें कन्या को बाप के पास जाने से रोकती हैं। क्यों रोकती हैं? कही ऐसा ना हो जाये व्यभिचारी वृत्ति पनप जाये। बाकी छोटे बच्चे हैं बच्चा वृत्ति हैं तो बाप के गोद में बच्ची क्यों नहीं जा सकती? आज के दुनिया में तो जो भी बाप है वो सब विकारी हैं तो नहीं जाना चाहिए।

Time: 36.12-37.35

Student: Baba I have heard that when Brahma baba was present in a corporeal , the children used to sit in his lap.

Baba: So?

Student: So, can't they sit in the lap of Prajapita Brahma?

Baba: Is this something new? When the children can sit in the lap of Brahma… no body consciousness will develop if they sit in the lap of the mother but to sit in the father's lap… a father is a father. Even today in India, when a daughter becomes young, the mother stops her from going near the father. Why does she stop her? It shouldn't happen that an adulterated attitude develops [between them] . As for the rest, if they are small children, if they have a childish attitude, then why can't the daughter sit in her father's lap? All the fathers are vicious in today's world; that is why they shouldn't go [to him].

जिज्ञासू– बाप से डरते भी तो है बाबा कि कान के नीचे लगा दिया बाप तो फिर क्या करें। माँ तो लगायेगी नहीं। माँ तो बगल में बिठाती है। बाप तो कान के नीचे लगा देते तो डरते हैं बच्चे....

बाबा– हाँ–हाँ, लेट्रिन–वेट्रिन कर देगी तो माँ तो आराम से उठा लेगी, साफ करेगी। बाप को तो गुस्सा आ जाए–ये क्या कर दिया?

Student: They are afraid of the father [thinking:] what if he slaps me? A mother won't slap [the children]. A mother makes the children sit beside her. The children are afraid because the father slaps [them].

Baba: Yes, if the children pass stools, a mother will clean it up easily, she will clean it. A father will become angry [he will say:] what they done?

समय–37.40–43.10

जिज्ञासु– बाबा ने मुरली में बोला है कि बहू के हाथ का नहीं खाना चाहिए।

बाबा– ठीक है।

जिज्ञासु– तो अगर युगल जो हैं वो कहीं बाहर चली जाये और खाना तो ऐसे बोलते हैं कि एक ही घर में इकट्ठा ही बनेगा अलग नहीं बनने देगी। मतलब अकेले आपको नहीं खाना बनाने देंगे; हम ही खाना बनायेंगे। ....प्याज भी नहीं खायेंगे।

बाबा– माना ये हैं कि जो परिवार चल रहा हैं, उसमें मुखिया कि बात नहीं मानी जाती है। पहली बात तो ये पक्की हो गई।

Time: 37.40-43.10

Student: Baba has said in the murli, we should not eat the food prepared by the daughter-in-law.

Baba: It is correct.

Student: Suppose the wife goes outside and the people at home say: "the food will be prepared together in the same house. We will not let it be prepared separately. It means we won't let you cook food on your own; we ourselves will prepare food. …. we won't eat onions".

Baba: It means that the family doesn't accept what the head of the family says. First this topic has become clear

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासू– नहीं, नहीं मुखिया की बात तो मानी जाती है; पर बाबा ने मुरली के अंदर बोला हआ है कि .....
बाबा– क्या?
जिज्ञासू– बहू के हाथ का नहीं खाना चाहिए।
बाबा– हाँ, तो ये ही तो बात बताई कि बाबा ने ये तो नहीं बोला कि मुखिया की बात परिवार मे नहीं मानी जानी चाहिए। मुखिया है, बड़ा है, बुढ़ा है तो उसकी बात माननी चाहिए ना?
जिज्ञासू– बहू बुरा मान जायेगी फिर.....
बाबा– बुरा क्यों मान जायेगी? वो कौनसी परम्परायें हैं? वो आसुरी परम्परा के आधार पर है या जो बुढ़ा व्यक्ति परिवार में है उसकी मान्यता को माननेवाले हैं? शुरूआत में ही बिगाड़ा हुआ है, मोह में आकर के मेरे बच्चे–3 उनको कन्ट्रोल से बाहर कर दिया। नहीं तो रचना वो जो रचयिता के कन्ट्रोल में हो। वो पहले से ही कन्ट्रोल से बाहर हो गये वो तो बोलेंगे ही ऐसे। इतना बंधन थोड़े ही डालना चाहिए कि माँ–बाप अगर अपना खाना अपने आप बनाना चाहते तो उनको नहीं बनाने देंगे। वो अपनी मेहनत कर रहे हैं, अपनी एकस्ट्रा मेहनत अलग से कर लेना चाहते हैं तो उन्हे स्वतंत्रता देनी चाहिए कि अच्छा, तुम अपना खाना अपने आप बनालो। हम लहसून–प्याज खाना नहीं छोड़ेंगे। आप बनाना चाहो तो अलग बना लो। होना तो यह चाहिए कि जब बड़ा बुजुर्ग नहीं घर में लहसून–प्याज खा रहा है तो बच्चे भी छोड़ दे।
Student: No, no. What the head of the family says is accepted; but Baba has said in the murli that….
Baba: What?
Student: We shouldn't eat the food prepared by the daughter-in-law.
Baba: Yes, so this is what is said; Baba didn't say that you shouldn't listen to what the head of the family says. He is the head, he is elderly, he is aged, so, what he says should be accepted, shouldn't it?
Student: What if the daughter-in-law feels bad…?
Baba: Why will she feel bad? Which are those traditions? Are they the ones [who follow] the demonic tradition or are they the ones who accept what the aged person in the family accepts? They have been spoilt since the beginning itself due to attachment; 'my children-3'. You have let them go out of your control. Otherwise, only he who stays under the control of the creator is a creation. They have gone out of your control since the beginning itself, so they will certainly say like this. They should not control them them so much that they won't let the parents cook food on their own if they wish to do so. If they (parents) themselves are working hard, if they want to do some extra hard work for themselves, then they should be given freedom [saying:] "Alright, cook your food on your own. We won't stop eating garlic and onions. If you wish to you may prepare [food] separately". [Actually,] it should happen like this that when the elderly person at home doesn't eat garlic and onions, the children should leave it too.

जिज्ञासू– नहीं, वो नहीं खाते घरवाले नहीं खाते।
बाबा– नहीं खाते....
जिज्ञासू– बनता ही नहीं। पडता ही नहीं।
बाबा– तो फिर आप के लिए अलग से ऐसा भोजन बनाने के लिए वो स्वीकृति दे दे, सारा काम हम कर लेंगे और आप सिर्फ कुकर में खडे होकर थोडे सीटी बजा लो। उनको क्या मुसीबत आती है?
जिज्ञासू– बोले–दुनिया में हमारी बेइज्ज़ती होती हैं। .....
बाबा– आप बेइज्ज़ती फील क्यों करते हैं?
जिज्ञासू– हम तो फील नहीं करते; लेकिन वो....
बाबा– उन्हें करने दो। आप ड़रते है। कहीं ऐसा ना हो, कल ऐसा टाइम आ जाये जिसमे हमारी कोई सेवा–सुश्रुशा करनेवाला ना रहे। ये ब्रह्माकुमारों की जमात तो सब एक जैसी नहीं है कोई इस्लामी बननेवाला है, कोई क्रिश्चियन बननेवाला है, कोई मुसलमान बननेवाला है, इसलिए

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

इनका तो कोई ठिकाना नहीं। कम से कम अपने बच्चों की तो बात मानते रहे। अरे, आज कल कुकर निकल पडा है, गैस निकल पड़ी है। कुकर में दाल, चावल, आलू–2 तीनों इकट्ठे अलग–2 बर्तनों में रख दो। कितनी देर लगती है? 10 मिनिट में अपने आप बन के तैयार हो जाता है। सबसे अच्छा भोजन है दाल, चावल, आलू। कितनी देर लगेगी? सारा बर्तन वही छोड़ दो। अच्छा, लो सेवा करो।

Student: No, they don't eat it; the people at home don't eat it.

Baba: They don't eat…

Student: [Food having garlic and onion] is not prepared at all. It is not put [in food] at all.

Baba: So, they should allow you to make such food separately on your own. [They should say:] "We will do all the work; you just stand beside [put them in] the cooker and let the whistle blow[6]" What trouble do they have?

Student: They say: We become insulted in front of the world …

Baba: Why do you feel insulted?

Student: We don't feel insulted, but they…

Baba: Let them do feel. You are afraid: "It shouldn't happen like this that such a time comes tomorrow that no one remains to serve us. In this gathering of the Brahma Kumars all are not alike, someone is going to become a follower of Islam, someone is going to become a Christian, someone is going to become a Muslim; that is why there is no guarantee of these people. We should accept what our children say at least." Arey, nowadays the cooker has been invented, gas has been invented. Keep *dal*[7], rice and potatoes together in different vessels. How long does it take? It gets ready within 10 minutes on its own. The best food is: *dal*, rice and potatoes. How long will it take? Leave all the vessels there [and tell them]: "Ok, serve me [by cleaning these vessels]!".

दूसरा जिज्ञासु– वो कहेंगे बर्तन भी आप ही धोओ आपने खाया है....।

बाबा– अच्छा, तो एक कुकर धोने में कितनी मुसीबत आती है? हम बर्तन भी ज्यादा नहीं खराब (करेंगे)। उसी कुकर में ठंड़ा करेंगे, ठंड़ा करने के बाद हप–2 कर के खा लेंगे। धो लेंगे। (किसीने कुछ कहा।) अब वही तो बात है मोह आता है तो सब तरह की परिक्षायें भी आयेंगी। मोह, मोह भी ऐसा है कि यहाँ तो खास परिक्षा ही है नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा। अभी नहीं छोडोगे (तो) आगे चलकर ऐसा टाईम आनेवाला है जिनको बच्चा समझते हो, बच्ची समझते हो, बहु समझते हो वो बिल्कुल ही दूध की मक्खी तरह निकाल कर अलग कर देंगे। तब समझ में आयेगा? फिर मेरे–3 सब निकल पड़ेगा।

दूसरा जिज्ञासु– तो आपके पास भाग आयेंगे जब वो ऐसा करेंगे तो।

बाबा– कौन भाग आयेंगे? (किसीने कुछ कहा।) तब तक लेनेवालों ने ले लिया। वो अपनी जगह आसिन हो गये कुर्सियों पर। तुम्हारे लिए जो कुर्सिया पीछे नीचे–2 की रह जायेगी उन्हीं पर बैठना पड़ेगा।

जिज्ञासु–.....

बाबा– अभी आ जायेंगे। हिम्मत करो। भरी सभा में बोल देना तो बहुत सहज होता है हम अभी आ जायेंगे आपके पास। बोलना बड़ा आसन है।

जिज्ञासु– नहीं–2 बाबा। कर के दिखायेंगे।

बाबा– गें,गें,गें,गें।

Another student: They (the people at home) will say, wash the vessels too on your own; you have eaten in it….

Baba: Alright, then how much trouble is there in washing one cooker? "We won't spoil many vessels either. We will cool the food in the same vessel, eat it [in the same vessel] after it cools and wash it. (Someone said something). Now, that's it. If there is attachment, all types of

[6] cook the food
[7] pulses

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

examinations will also come. The attachment is such [a paper] that here the main examination is of *nashtomoha smritilabdha*[8]. If you don't leave attachment now, such a time is going to come that those whom you consider your child, whom you consider your daughter, whom you consider your daughter-in-law will remove you [out of the house] just like a fly is taken out of milk. Will you understand then? Then you will forget all my-3.
Another student: When they do so, we will come running to you.
Baba: Who will come running? (Someone said something). Till then those who had to take [a high seat] will have taken it. They will become set on their seat. You will have to sit on the remaining lower chairs that are left behind.
Student: ….
Baba: Will you come now itself? Show courage. It is very easy to say in front of a huge gathering: "We will come to you now itself". It is very easy to say.
Student: No Baba. We will do it.
Baba: We will, will, will….

समय–44.00–44.30
जिज्ञासु– बाबा, अब हम जो भी हैं, जैसे भी हैं बाबा आपके हैं। हमारी नैया को अंत तक पार लगाना आपका काम है।
बाबा– ये कह देना तो बड़ा आसन होता है। हम जो भी है, जैसे भी है आपके है। लेकिन फिर.. ..
जिज्ञासु– बाबा हमें तो नशा चढ़ा हुआ है कि हम बाबा के है।
बाबा– फिर प्रैक्टिकल में करने में भी तो होना चाहिए ना। करना भी तो होता है।
Time: 44.00-44.30
Student: Baba, now whatever we are, however we are, we are yours. To take our boat across till the end is your work.
Baba: It is very easy to say this: "Whatever we are, however we are, we are yours. But then…
Student: Baba we have this intoxication that we belong to Baba.
Baba: Then you will have to do it practically too, won't you? You have to do it as well.
……
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

[8] Conquering attachment and regaining the awareness of the self.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info